

Birthday Puja

Date : 17th March 1992
Place : Mumbai
Type : Puja
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 04
English	05 - 05
Marathi	-

II Translation

English	06 - 08
Hindi	-
Marathi	09 - 10

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

हमारे देश में बहुत से सन्त हुए। हमने सिर्फ उनको मान लिया क्योंकि वो ऊँचे इंसान थे। किसी भी धर्म में आप जाइये कोई भी धर्म खराब नहीं। मैंने बुद्ध धर्म के बारे में पढ़ा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि मध्य मार्ग बताया गया था। लेकिन उसके बाद लोग उसको बायें में और दायें में ले गये। जो दायें में ले गये वो पूरी तरह से सन्यासी हो गये, त्यागी हो गए। फिर उन्होंने बड़े-बड़े कठिन मार्ग और उपद्रव निकाले। उन्होंने सोचा कि बुद्ध सन्यासी हो गए थे तो उन्होंने भी सन्यास ले लिया। अपनी सभी इच्छाओं का दमन कर लिया उन्होंने। इस तरह का स्वभाव व्यक्ति को अति उग्र, इतना ही नहीं आतताई भी बना देता है। उसमें बहुत क्रोध समा जाता है। क्रोध को दबाने से क्रोध और बढ़ता है। ऐसे लोग कभी-कभी ऊपरी-चेतना (Supra-conscious) में चल पड़ते हैं और उन्हें कुछ-कुछ ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिससे वो दूसरे लोगों पर अपना असर डाल सकते हैं। हिटलर के साथ यही हुआ। हिटलर के गुरु एक लाम्हा साहब थे और उस लाम्हा से उन्होंने सीखा किस तरह से लोगों को हम अभिभूत करें और उनको किस तरह से अपनायें। जो धर्म बुद्ध देव ने इतना ऊँचा बनाया था कि हम लोग निर्वाण को प्राप्त करें वो धर्म दायें ओर बहक गया। दूसरा जिन लोगों ने सोचा कि नहीं हम लेफ्ट साईड में चलें तो उससे तांत्रिक पैदा हो गये। लद्दाख वगैरा में यदि कोई मर जाए तो उसके हाथ की पूजा करेंगे। नेपाल में भी मैंने देखा हर जगह लेफ्ट साईड इतनी ज्यादा बढ़ गई कि ये सब भूत प्रेत, शमशान पिशाच विद्या में पड़ गये। इस प्रकार दो तरह के लोग बुद्ध धर्मी हो गये। बुद्ध का इससे कोई सम्बंध नहीं और बुद्ध धर्म का भी इन लोगों से कोई संबंध नहीं। इसाई लोगों ने भी ईसा के क्षमा के गुण को त्याग कर लोगों पर मनमाने अत्याचार किए। मुसलमान कुरान पढ़ कर तथा इसाई बाइबल पढ़ कर एक दूसरे को मारते हैं और सोचते हैं कि बड़ा भगवान का कार्य कर रहे हैं। मेरा ही धर्म अच्छा है और दूसरों का खराब। जब तक आत्मा की जागृति नहीं होती तब तक आप किसी भी धर्म को अन्दर शोषित नहीं कर सकते उसको अन्दर बैठा नहीं सकते। वो अन्दर आ ही नहीं सकता। वो बाह्य में ही रह जाता है। बाह्य में रह कर धर्म सत्ता या धन के पीछे दौड़ता है आत्मा की ओर नहीं बढ़ता। जब आत्मा का प्रकाश आ जाता है तो अकस्मात् आदमी उस तत्व को अपने अन्दर समाया हुआ पाता है। उसको कोई मेहनत नहीं करनी।

“सहज” सहज समाधी लागो। सहज में ही आपके अन्दर ये भावना आ जाती है। हिन्दुओं में अब जो बताया गया है कि सब में आत्मा है, एक ही आत्मा का वास है। फिर हम जात-पात कैसे कर सकते हैं? पहली बात तो यह सोचनी चाहिये कि रामायण जिसने लिखा वो कौन था? बाल्मीकी एक डाकू था, डाकू भी था और वह एक मछूआरा था। उससे रामायण राम ने लिखा दिया। भीलनी के झूठे बेर खा के दिखा दिया। और गीता का लेखक व्यास कौन था? वो भी एक भीलनी का नाजायज पुत्र था। ये सब उन्होंने यह दिखाने के लिये किया कि जाति-पाति से जो हम एक दूसरे को अलग कर रहे हैं ये जाति हमारे अन्दर की रुझान (झुकाव) है। जिसका लगाव परमात्मा से है उसी को ब्राह्मण कहा जा सकता है। उस हिसाब से बाल्मीकी ब्राह्मण थे और व्यास भी ब्राह्मण थे। तो कर्म के अनुसार अपने यहाँ जाति बहुत देर बाद मानी गई।

जितने भी बड़े-बड़े अवतार हुए उन्होंने जाति प्रथा को खण्डित कर दिखाया। कबीरदास जी के गुरु ब्राह्मण थे। कबीरदास के गुणों के कारण उन्होंने उन्हें बहुत सम्मान दिया। महाराष्ट्र के महान कवि नाम देव जो दर्जी थे। उनकी नौकरानी तो कोई नीची जात की स्त्री रही होगी। उसकी भी कविताएं ग्रन्थ साहित्य में हैं। नामदेव जी की तो है ही। गुरु नानक जी ने इसको पहचाना क्योंकि वो भी एक पहुँचे हुए पुरुष थे। जो वहाँ पहुँच जाते हैं वो समझते हैं कि, कौन असल है और कौन नकल। तो जो नकल में धर्म हो रहे हैं जिससे हम लोग घबड़ा जाते हैं उनके लिये हमें सावधान रहना चाहिये। उनके प्रति दया रखनी चाहिये क्योंकि वो अन्धे हैं। जैसे कबीर साहब ने कहा कैसे समझाऊँ सब जग अन्धा। जो अन्धे लोग हैं वो ऐसे ही अन्धे-पन में रहते हैं। कोई कहेगा मैं इसाई हूँ, कोई कहेगा मैं मुसलमान हूँ, कोई कहेगा मैं सिख हूँ। जैसे ही आप कहेंगे मैं ये हूँ आप अपने को अलग हटा लेते हैं। लेकिन सहजयोग में आप समझ गये हैं कि सब धर्मों का तत्व एक है। ज्योंही हम धर्म को मानने लगते हैं। धर्मान्धता समाप्त हो जाती है। धर्म-धर्मान्धता ही आज का प्रश्न है। इसी के कारण विश्व में इतने झगड़े फैले हुए हैं। जब आपके अन्दर यह सत्य बैठ गया कि सभी धर्मों का तत्व एक है तो सारे झगड़े एक दम खत्म हो जायेंगे और वो तत्व आप लोगों में बैठ गया है। आपको पता है सहजयोग में मुसलमान हैं हिन्दू है इसाई हैं, सिख हैं, बौद्ध हैं, हर तरह के लोग इसमें आये हैं और सब अपने-अपने धर्म

को मान भी रहे हैं। पर जब वो अपने को मान रहे हैं तभी वो विश्व धर्म को मान रहे हैं। जब आपने एक विश्व धर्म को मान लिया उस विश्व धर्म में सारे ही धर्म हैं और सब धर्मों का मान करना यह सुझाता है। यही समझ की बात है। सब अवतरणों का मान करना, जितने भी आज तक बड़े-बड़े सन्त, साधु दृष्टा हो गये सबका मान करना विश्व निर्मल धर्म सिखाता है। ये सिर्फ कहने से नहीं होता, समझाने से नहीं हो सकता। ये आत्मा के प्रकाश में अपने आप अन्दर बैठ जाता है। उसको फिर कहने की जरूरत नहीं होती। तब आप सोचिए कि आप सहजयोगी हो गये। सहजयोगी हो गये माने आप बढ़िया लोग हो गये। देखिये आप किसी का कत्ल नहीं कर सकते। आप किसी की कोई चीज छीन नहीं सकते आप चोरी चकारी कुछ नहीं कर सकते। आप किसी की बुराई नहीं करते, आप किसी को नीचे खींचने का प्रयत्न नहीं करते या आप किसी भी प्रतिस्पर्धा में नहीं पड़ते। आपको ये नहीं लगता कि, मैं इसकी खोपड़ी में जाकर बैठ जाऊँ इसकी गर्दन काट लूँ। जहाँ है वहाँ समाधान में आप बैठे हैं और अपने ही आप उन्नत हो रहे हैं। आप किसी के साथ दुष्टता नहीं करते। देखिये, सास होती है बहु होती है कभी बहु सास को सताती है कभी सास बहु को सताती है। पर सहजयोग में ऐसा बहुत कम है। दिखाई नहीं देता। ऐसे ही आपकी गृहस्थी में आदमियों की और औरतों की जो स्थिति है वह विशेष है। पति पत्नी में आपस में पूरी तरह से ऐसी एक-तारता है कि पति किसी और औरत की ओर देखता नहीं और स्त्री किसी और पुरुष की ओर देखती नहीं। इतनी शुद्धता है। बाह्य का आकर्षण जो लोगों को होता है वो आप नहीं रहे क्योंकि आप स्वाभिमान में हैं। आपको अपने स्व का अभिमान है। आपकी आंख ठहर गई, अब चंचल नहीं रही। इधर-उधर नहीं घूमती। अब तो आपके बच्चे, आपके माँ-बाप आपको देखते हैं तो वह भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं, अभिभूत हो जाते हैं कि देखो कैसे हो गये ये लोग। ये चोरी नहीं करते, झूठ नहीं बोलते, मारते नहीं-पीटते नहीं, कोई दंगा नहीं, फसाद नहीं, कुछ नहीं। इतने शांतिमय, इतने आनन्दमय आप सब लोग हो गये। लोग मुझसे कहते हैं कि आप इतनी बीमारी ठीक करते हैं, इतना कुछ करते हैं आप पैसा नहीं लेते। और आप लोग कहाँ लेते हैं? आप लोग भी तो सहज का काम मुफ्त में ही कर रहे हैं। मैंने तो किसी को नहीं देखा कि सहज के काम के लिए आप लोग पैसा मांगते हैं या कुछ करते हैं। एक से एक कविताएँ आप लिखते हैं, एक से एक गाने आप गाते हैं। कोई भी मैंने देखा नहीं जो कहता हो कि, नहीं इस काम में मुझे पैसा चाहिये। कितनों को आपने जागृति दी, कितनों को आपने प्रार करवाया है, कितने ही सेंटर्स आपने चलाये हैं लेकिन मैंने कहीं नहीं सुना कि इसके लिये माँ तुमने इतनों को जागृति दी तो आप हमें उसका पैसा दीजिए या उसके लिये कोई आप हमें खिताब दीजिए कि इतने 108 जागृति वाले

या 1008 जागृति वाले। ऐसा कुछ नहीं। इस पर आपको हंसी भी आती है कि ये सब क्या है? इन सब बाह्य चीजों से आप लोग अपने आप ही उठ गये और आप अपने बारे में कुछ जानते ही नहीं। मुझे तो यही देख-देख करके बड़ा आश्चर्य होता है कि आप अपने बारे में कुछ जानते ही नहीं। सब मुझ ही को गौरव दिये जा रहे हो। ऐसे कौन से मैंने गौरव के काम किये हैं? मुझे तो समझ में नहीं आता। आपके अन्दर अपनी शक्ति है वो जागृत हो गई और आपने अपनी आत्मा को प्राप्त किया। उस आत्मा की वजह से सब कुछ हो गया और कितनी गौरवशाली बात है कि आपने अपने गौरव को प्राप्त किया। आप बंदूक लेकर किसी को मारेंगे नहीं, किसी का घर लूटेंगे नहीं, किसी औरत को विधवा नहीं करेंगे, किसी के बच्चे का आप अपहरण नहीं करेंगे, कभी कर ही नहीं सकते। मेरे कहने से नहीं। आप शराब नहीं पियेंगे, आप चरस नहीं खायेंगे। क्या-क्या होता है दुनियाभर की गन्दगी? आप कोई गन्दी जगह ही नहीं जाएंगे। गन्दे चित्र नहीं देखेंगे, गन्दी किताब नहीं पढ़ेंगे। मुझे कहने की जरूरत नहीं। आप पढ़ेंगे ही नहीं। कोई गन्दी बाद करेगा आप सुनेंगे ही नहीं। आपको अच्छा ही नहीं लगेगा। कितने शुद्ध हो गये हैं आप लोग! और अपनी शुद्धता को आप यत्न से रखते हैं। कोई ऐसी वैसी चीज होगी आप वहाँ से भाग निकलेंगे, मुझे नहीं चाहिये। और अगर कहीं जाना ही पड़ गया तो उसे एक नाटक की तरह से आप देखते हैं। बहुत से लोग बताते हैं मैं वहाँ गया था तो देखा वो सब शराब पी-पी के कैसे घूम रहे थे। किस तरह से औरतों के साथ बातचीत कर रहे थे। और मुझे आ करके सब वर्णन बताते हैं। ये दृष्टि जो कि एक साक्षी स्वरूप की है वो आपके अन्दर आकस्मिक रूप से आ गई।

दूसरा आपस का प्रेम-भाव इस्लाम में इस पर बहुत कुछ कहा गया कि आपस में प्रेम-भाव बंधुत्व और औरतों के प्रति भगिनीभाव की बात भी कही। इस कदर आपस में प्रेम भाव है। बहुत ही पहले की बात है इटली में एक लड़की इंग्लैण्ड से गई थी। पता नहीं किस काम से गई थी और दूसरी एक फ्रांस से वहाँ पहुँची। दोनों जने एक रेस्तरां में कुछ खा रही थीं। देखते-देखते एक ने दूसरे को देखा और न जाने क्यों उनको लगा इसमें कुछ वाईब्रेशन आ रही हैं। तो एक उठके दूसरे के पास गई और उससे कहती है क्या तुम्हें श्री माताजी ने आत्मसाक्षात्कार दिया है? उसने कहा हाँ और तुम्हें भी दिया है न? और बस फिर दोनों एकदम गले मिल गये। कहीं भी जाके आप अमेरिका में जायें कहीं जायें बस सहजयोगी देखकर गदगद हो जाते हैं इन्हें कहाँ रखें, इनकी क्या सेवा करें, कैसे इनको रखें, कहाँ इनके। देखें? मैंने कहीं सुना नहीं कि कोई सहजयोगियों को किसी ने कहाँ सताया। वहाँ आपस में इस कदर प्रेम उमड़ता है लोगों में, यदि किसी के कुछ चक्र खराब हो तो भी उसको अत्यन्त प्रेम से लोग देखते हैं। स्वयं तकलीफ

सह कर भी उसे ठीक करते हैं। और मुझे बड़ा कभी-कभी आश्चर्य होता है कि कुछ-कुछ तो इतने ज्यादा पकड़े हुए लोग होते हैं तो भी कभी मुझसे आके शिकायत नहीं करेंगे कि ये बड़े पकड़े हुए हैं इनको सहजयोग से निकाल बाहर करें। मैंने सिर्फ एक ही बात देखी है कि अगर कोई मेरी निन्दा करता है तब आप लोगों से बर्दाश्त नहीं होती। तब फिर आपकी बर्दाश्त सारी खत्म हो जाती है। ये तो मैंने देखा हुआ है। और यही एक पहचान है कि आपको मुझसे बहुत प्रेम है। इतना ज्यादा प्यार आपने मुझे दिया है, इतना ज्यादा मुझे भरोसा हो गया है। मेरा जो एक स्वपन था कि सारे संसार में जागृति हो जाए। जब तक जागृति नहीं होगी तब तक संसार के प्रश्न नहीं मिट सकते। क्योंकि हमारे वातावरण संबंधी, आर्थिक, परिवारिक जो सभी समस्याएं हैं इनकी जिम्मेदारी किसकी है? इंसान की है। इंसान ने ही ये प्रश्न खड़े किये हैं और यही इंसान अगर बदल जाये और इसके अन्दर वो विश्व बंधुत्व आ जाए तो झगड़ा किस चीज का करेंगे? अगर सभी एक चीज को मानते हैं सबको एक ही चीज मालूम है, तो झगड़ा किस बात का? और फिर ये जो सारे प्रश्न हैं ठीक हो जाते हैं।

अब देखिये इतना सुन्दर आपका आश्रम बन गया, आप लोगों की इच्छा आप लोगों का मन ये बहुत बड़ी चीज है अब आप जब भी अखबार पढ़ें तो सामूहिक तरह से आप इच्छाएं करें कि माँ पंजाब की सारी समस्या समाप्त हो जानी चाहिए। समाप्त हो जाएगी। कुछ न कुछ बन जाएगा। आपको और भी कोई प्रश्न हो, दरिद्रता अपने देश में बहुत है। वो सिर्फ दरिद्रता-दरिद्रता करने से नहीं जाएगी। नदी के बीच की धारा की तरह हम लोग बीच की धारा में हैं। हम लोग बड़े रईस भी नहीं हैं और बड़े गरीब भी नहीं हैं। जब बीच की धारा बढ़ती जाएगी तो इधर रईस भी इसमें आ जाएंगे और गरीब भी इसमें समाते जाएंगे और इसी तरह से हमारे प्रश्न छूटेंगे। बहुत से लोग गरीबी चाहते ही हैं जिससे उनका बोलबाला बना रहे। अब आप लोग खुद अपनी शक्ति देखिये कि सबकी कितनी तेजस्वी शक्तें हो गईं। कोई अगर ऐयरपोर्ट पर देखते हैं तो कहते हैं ये किस देश से आये हैं? सबकी शक्तें इतनी तेजस्वी हैं। पर मैंने बहुत सारे लोग देखे हैं जो कि गेहूँ वस्त्र पहन के सब बाल-वाल काट-कूट करके और खड़े हुए हैं। वहाँ देखने में तो ऐसा लगता है जैसे अभी अस्पताल में जाने वाले हैं। और कोई-कोई ऐसे दिखाई देते हैं कि क्रोधो जैसे कि उनसे दूरी से बात करें नहीं तो इतनी गर्मी आपको आएगी कि पता नहीं कुछ बात की तो झापड़ ही न मार दे। तो किसी में भी आप नहीं पाइयेगा इस तरह की शालीनता, इतना प्यार, इस तरह का प्रेम। ये किसी भी समाज में नहीं है, हमारे सहजयोग में है। इसके लिये आपका अभिनंदन होना चाहिये और आपकी विशेषता होनी चाहिये। आप लोग सब मेरी पूजा करते हैं उससे कहते हैं लाभ-वाभ होता है। जो भी होता हो उसके लिये मैं क्या करूँ।

लेकिन ये जरूर कहूँगी कि इस पूजा के पीछे मैं आप लोग हों। आप अगर ऐसे नहीं होते तो कितनी भी पूजाएँ हों (क्या मंदिरों में कम पूजाएँ होती हैं कितने-कितने स्वयंभू बने हुए हैं क्या कुछ कम होता है बहुत कुछ होता है) लेकिन किसी के अन्दर कुछ घुसता ही नहीं। जैसे के तैसे। जो करना है वो करेंगे ही। जो गलत काम है वो करते ही रहेंगे। कुछ उनमें विशिष्टता नहीं है। लेकिन सहजयोग एक बड़ी विशेष चीज है और आज देखिए इतने देशों में सहजयोग फैल गया, इतने देशों में फैल गया है मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। इतना तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि इतना हो जाएगा। सोचा था कुछ हो जाएंगे लोग फिर वो आगे करते रहेंगे। लेकिन मेरी जिन्दगी में इतने लोग इसे प्राप्त करेंगे ऐसा मैंने कभी नहीं सोचा था। और जो मेरे मन में एक स्वपन था वह वाकई आज साकार हो गया है।

अब जब कुछ भी आप करें, कुछ भी आप सोचें, किसी भी चीज में आप हाथ डालें, पहले याद रखना चाहिये कि हम योगीजन हैं। हम सर्वसाधारण नहीं हम योगीजन विशेष हैं और इसलिये हमको विशेषरूप से सबको और नजर करना चाहिये और देखना चाहिये। जितने लोग हो सकें उनको योगी बनाना चाहिये। इसी से सारे संसार का भला होने वाला है जैसे हमारा भी भला हुआ। आज मेरे जन्म दिन पर यही कहना है कि आप लोगों का फिर से जन्म हो चुका है। हर जन्म दिन पर आयु बढ़ती ही जाती है, आयु के साथ अगर आपमें प्रगल्भता न आये, परिपक्वता न आये तो ऐसी आयु बढ़ने से कोई लाभ नहीं। आप भी अब सहजयोग में बढ़ रहे हैं लेकिन इसमें जरूरी है कि हमारे अन्दर प्रगल्भता आये, परिपक्वता आनी चाहिये। जब आप धीरे-धीरे इसमें पक जाएंगे तब आप स्वयं ही एक बड़े भारी वृक्ष की तरह अनेक लोगों का फायदा कर सकते हैं। आप सबमें ये शक्तियाँ आई हैं और मैं चाहती हूँ कि मेरी सारी शक्तियाँ आप सब में आ जाएँ और आप सब एक से एक बड़े हो जाएँ। माँ तो हमेशा यही सोचती है कि अपने बच्चों को अपने से भी कहीं अधिक ज्यादा सुख मिलना चाहिये। बड़ी खुशी की बात है कि आप लोग बड़े आनन्द में बैठे हुए हैं और उस निर्वाण का उपभोग ले रहे हैं जिसके लिये बहुतों ने अनेक प्रयत्न किये थे इतने सहज में सब आपने प्राप्त कर लिया यह भी पूर्व पुण्याई है। मेरा आप सब पर अनन्त आशीर्वाद तो है ही लेकिन हर समय खयाल बना रहता है और जब आपको छोड़ कर जाते हैं तो ऐसा लगता है कि किसी ने मेरा दिल ही खींच लिया। फिर यही सोचती हूँ कि आगे जहाँ जाना है वहाँ कितने लोग खड़े होंगे। जब उनको देखते हैं तब फिर ये सारा कुछ ऐसा लगता है ठीक है। मुझे अभी तो लगता नहीं कि मैं कोई सत्तर साल की हो रही हूँ। आप सबको देखकर कं बहुत आनन्द से विभोर हूँ मैं। और ये सोचने का तो समय ही नहीं रहता कि उमर क्या हो रही है अपनी।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I had to speak in Hindi language because most of them understand only Hindi language, not English.

Whatever I have said is very simple that because you have got your realisation you can absorb the essence of all the religions and once you understand that essence of all the religions is same and that we worship all the incarnations and all the saints there will not be any more fundamentalism left. It is the end of fundamentalism. Because we believe in all the religions. We believe in all the incarnations. With Sahaja Yoga the transformation of human beings has taken place so the problems which are ecological, economic, political and all that are automatically solved as soon as You get your transformation. Moreover it is very creditable for you to become something. I have not become anything. I am like this. I have been like this and I will be like this. But you have become something.

So it is very creditable. And moreover Sahaja Yogi does not know, how great he is. How beautiful he is. He does not know his glory. He is not like other people who shoot others, who kill others, who are thieves who plunder others and in the name of God they murder others, make money, torture others in the name of religion. They are very unkind. You are not like that. You are changed completely. You cannot do that. Moreover people are extremely immoral. They talk of God. They will go to church and temples while they will have eyes on other's women and they will have very immoral attitude towards life. And they will deceive their husbands or wives and do all kinds of things. But those who have come to Sahaja Yoga now have got very innocent eyes, very pure. Their life has become so pure now. You are not even aware of it. Many people say that I cured so many people and I don't take money. But I would like to tell you that you also do the same. You also don't take any money for doing Sahaja Yoga work. You spend your own money and work it out because you are enjoying.

So what a great thing it is that you have become the spirit. These religions are not spirit oriented. They are power oriented or money oriented. They are no religions. They are nowhere near what they have been preaching about, nowhere near their religions and they call themselves religious. They are not. So the fundamentalists are really anti-religion. While we are the people who have found the essence of all the religions, the same. And that's how we have finished this problem of fundamentalism. Once it happens we will have no problem at all of these people, fighting each other. Like I was told that when these Ajarbaijan people were killed by the Christians-Armenians, they used to read Bible first and do that. And Ajarbaijan had also done the same that they would read their Koran, do their namaz and then go and kill people. How can that be connected with righteous people, who believe in God and who believe in the Truth. The love also that is being told everywhere, the kind of brotherhood that is also absolutely with you. Spontaneously you are so kind, nice and affectionate to each other. I don't have to tell you anything. How nicely you organise everything among yourselves just as if it's one body that's organising itself. So beautiful it is and such understanding, such wisdom, such maturity. I am very proud of all of you, all over the world.

May God bless you all.

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

You have celebrated my birthday with so much love. You got your self realisation, and the special thing is that you became something and gained something. I am what I am. I don't have to become anything. It is such a great thing that you got self enlightened through your Spirit. All Sahaja Yogis have now become so good and dharmic. If you see people who belong to other religions they follow their rules and regulations with great difficulty; they fast, go to the Himalaya stand on their heads and do various things but still their Spirit is not enlightened. They will believe in some guru or God, but do they try to become like that guru? To believe means nothing when their gurus' shaktis and qualities have not enlightened them. No religion is bad in itself. It is the way people have followed them. Some went into the right and some into the left.

The right sided ones became ascetics. They made very laborious and complicated paths. They thought if Buddha got enlightened through so much suffering and through a very difficult path why should we not follow the same if not more laborious paths. So many people became entangled in these paths. Eating only once, sleeping on the ground, living in cold weather with little clothing, staying alone etc. They completely suppressed what was given to them by nature. **By suppressing their natural instincts and behaviour patterns one becomes very irritable and aggressive.** Such people have a lot of anger in them. **By suppressing anger it grows more.** Such people sometimes go into the supra-conscious. They may then gain such powers or siddhis by which they can dominate others. For example Hitler. Hitler's guru was a Lama monk and he learnt from him how to control and subdue people. Buddha had created such a high dharma on how to reach Nirvana and that religion went into the right side.

Then the other type of people went into the left side and tantrism was born. There are places in Ladakh where they will pray to the hand of a

dead body. Even in Nepal the left side has grown so much that they do tantrik vidya, bhoot and shamshan vidya. Thus two types of people were created in Buddha Dharma. Buddha has no connection with them and vice versa. The same thing is there in Christianity. They wanted to gain some powers within so they crucified people and did all sorts of things in the name of Christ. Even now you will see in Armenia how they killed thousands of people in Azerbaijan. When they used to kill they would take the Bible in one hand as if God was with them, and they think that only their religion is correct and the Muslims are bad. The Muslims do the same thing. Islam is beautiful and a tremendous religion. Even great Muslim scholars say that there is a lot of difference between Muslims and Islam. They feel it is because they are not educated. But education also creates foolish people. Like Kabir has said "By reading the pandits have become foolish." Till the spirit is not enlightened nothing is going to happen. You cannot imbibe any religion within. It will not enter. It will just remain on the outside and then you will get lost. Either you become money oriented or power-oriented. But never spirit oriented.

When the Spirit gets enlightened then a person unexpectedly finds that tattwa within himself. He does not have to struggle. This feeling comes within spontaneously. In Hinduism it is told that the same spirit resides in everyone. Then how can we have class and caste consciousness? One should think that the one who wrote Ramayana was a robber and a fisherman. Ram did not write the Ramayana. Ram ate the half eaten berries of Shabari who was a low caste woman. The Gita was also written by Vyas who was the illegitimate son of a low caste woman. All this was done to show that there is something lacking within ourselves that we have created castes and class. The one who is inclined towards God and knows Him is a Brahmin. So then Valmiki was a Brahmin. Great incarnations came and refuted this again and again that you are a Brahmin by birth. Kabir's

guru was a Brahmin and he accepted Kabir a weaver as his disciple. Namdev was a great poet saint of Maharashtra who was a tailor. Namdev's poems are included in the Granth Sahib, the holy Book of the Sikhs. Guru Nanak recognized all this because he was an enlightened soul. The ones who reach there understand who is real and who is false. We should have compassion towards the people who are following these false things in the name of religion because we know they are blind. Like Kabir has said "How can I explain when the whole world is blind." Some will say I am Christian, Hindu or Muslim. You are making yourselves separate.

In Sahaja Yoga you have understood that the essence of all religions is the same. When we believe in all religions then this fundamentalism which is spreading in the world will finish off. You should not only realise that all religions are one but it should be imbibed within. It should sink within. In Sahaja Yoga there are Hindus, Muslims, Christians, Sikhs and Buddhists. When you believe in one Vishva Dharma then all the religious are in that one religion. This is the wisdom. And then you believe in all the incarnations and saints. You cannot make it happen by talking or intellectualising. It happens by the light of the spirit which sinks deep within you, then you don't need to say. You are Sahaja Yogis so you just cannot tell lies, steal, torture or kill anyone. Now you cannot do anything that is bad. You do not try to pull anyone down or get into competitions. You are sitting in profound satisfaction and meditation and know that everything is getting done. Even in your married life there is deep understanding between husband and wife and no husband or wife will look at other men or women even though there are many beautiful women and handsome men. This outer attraction which happens to others does not touch you. You have respect for yourself. Your eyes are steady now and even such thoughts do not enter your mind. Even other people are impressed by you. How you live in such peace and harmony.

People tell me that I cure so many and do not take any money. But neither do you take money. You will not kill, steal or make anyone a widow. You cannot kidnap anyone's child. You do not smoke or drink or take drugs. You will not go to any dirty places or make obscene paintings or read dirty books. I don't need to say. You yourself

will not do it. You do not listen to dirty nonsense because now you have become so pure. If you do have to go to some such dirty place you will go as witness looking at it as a drama. You have now got the witnessing power within you. There is lot of love for each other. You may go anywhere in the world and you will find Sahaja Yogis will look after you with so much joy. Of course some people take advantage and tell lies. Even then they are looked after. One person went to Madras and told them lies that Shri Mataji has sent him. He asked for a horse, for various things and they gave it to him with great love. Later on I got to know that this rogue had gone there on his own. I have seen that people bear it even though they suffer, but will never complain. But I have seen that if someone says anything against me you cannot bear it. And this is the proof of your love for me.

You have given me so much love and I have great faith that the dream I had of the whole world getting realisation will be fulfilled. Till this does not happen the world will not improve. We have all sorts of problems. Ecological, economic, political and family problems. The responsibility of this lies with human beings because they have created these problems. But when man changes and universal brotherhood enters within him then what would be the need to fight. Then all these problems will get solved by themselves. Whenever you read the paper you should collectively desire that the Punjab problem be solved and it will be solved. The problems of poverty will not be removed by shouting 'remove poverty.' We are in the middle of the river. Neither are we too rich or too poor. When this current grows then the poor and the rich will both come in. And in this way our problem will be solved.

All your faces shine so much. The kind of love we have in Sahaja Yoga is not there in any society. The followers of other gurus look like they are just about to enter into a hospital. That is why you should have self respect and there should be something special about you. You pray to me and tell me that you have benefited. But you are behind these beneficial pujas. If you were not like this you could go on praying and it would not have worked out. Are there less prayers or Pujas in temples? But nothing goes inside. They do so much offering to the Devi and Gods but still it does not go in. They are just the same. They go on committing sins and atrocities. There is nothing.

special about them. Now Sahaja Yoga has spread so many countries. I never thought that in my lifetime it would happen. The dream that I had has really come true. So we must remember that we are not, just simple Sahaja Yogis but we are special. We should try to make as many people yogis as possible. Then only can the world benefit and we will benefit.

Today is my birthday but your birthday should also be celebrated. At every birthday you grow in age but with this growth in age if maturity does not come then its no use. You are also growing in Sahaja Yoga but it is important that we grow in maturity. Once you are mature you will become like a large tree and benefit others. You

all have these powers. And I desire that all my powers also come within you. A mother always thinks that all her powers come within her children and they all become great stalwarts. You are sitting in such joy and taking the pleasures of Nirvana for which many had to struggle. All this has come to you in such a Sahaja Way. This is your punyas of previous lives. My blessings are always with you but this thought is always there that when I leave you my heart is wrenched. But when I think of the people in the other places waiting for me then I feel that those are my children., I travel a lot but when I see you my heart fills with joy and I never have time to think of my age.

May God Bless You.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

इतक्या प्रेमाने तुम्ही माझा वाढदिवस साजरा करीत आहात. तुम्हाला तुमच्या आत्म्याचा साक्षात्कार मिळाला आहे आणि विशेष म्हणजे तुम्ही घटित झाला आहात, आणि तुम्ही काहीतरी मिळविले आहे. मी जी आहे तीच आहे. मला काहीच व्हायचे नव्हते. तुम्हाला तुमच्या आत्म्यामधून आत्मबोधाची प्राप्ती झाली आहे. ही अतिशय महान गोष्ट आहे. सर्व सहज योगी आता फारच चांगले व धार्मिक झाले आहेत. दुसऱ्या धर्माच्या लोकांना पाहिले, तर असे दिसते की त्यांच्या धर्माच्या सर्व नियमांचे महत्प्रयासाने ते पालन करतात, उपास करतात, हिमालयांत जातात, डोक्यावर उभे रहातात व इतर अनेक गोष्टी करतात. पण त्यांचा आत्मा प्रकाशित झाला नाही. त्यांच्या गुरुंच्यावर देवावर, ते विश्वास ठेवतात पण ते गुरुंच्या सारखे होण्याचा प्रयत्न करतात का? त्यांच्या गुरुंच्या शक्तीमुळे व गुणामुळे ते प्रकाशित झाले नसल्यास केवळ विश्वास ठेवण्यात काहीही अर्थ नाही. कोणताच धर्म वाईट नसतो. लोक त्याचे कसे आचरण करतात त्यांच्यावर सर्व काही आहे. काही डाव्या बाजूमध्ये तर काही उजव्या बाजूमध्ये गेले.

उजवी बाजू प्रधान लोक तपस्वी झाले. त्यांनी कठीण व मेहनतीचे मार्ग घालून दिले. त्यांना वाटले, बुद्धांना खडतर मार्गाने व त्रास सहन करून बोध मिळाला तर आपण, त्यांचेपेक्षा अधिक कठीण नाही तर तेवढ्याच अवघड मार्गाने कां जाऊ नये? अशा मार्गात कित्येक जण अडकून पडले. दिवसात फक्त एकदाच खाणे, जमीनीवर झोपणे, थंड हवेत कमीत कमी कपडे घालून रहाणे, एकटेच रहाणे वगैरे. निसर्गाने त्यांना जे दिले होते त्यांचे ते संपूर्ण दमन करायचे. नैसर्गिक संवेदनांचे आणि स्वाभाविक वागण्याचे दमन केल्याने ती व्यक्ति चिडखोर व आक्रमक स्वभावाची होते. अशा व्यक्तींच्या मध्ये फारच क्रोध असतो. राग दाबून टाकल्याने अधिक वाढतो, असे लोक कधी कधी सुप्रा कॉन्शसमध्ये (चेतना बाह्यतेत) जातात. मग त्यांना अशा प्रकारच्या शक्ति अथवा सिद्धि मिळतात की त्यांच्यामुळे ते इतरांच्यावर हुकुमत गाजवू शकतात. उदा. हिटलर. एक तिथेटी लामा हिटलरचा गुरू होता. आणि त्याचेकडून इतर लोकांच्यावर कसे नियंत्रण मिळवायचे व त्यांना कसे काबूत ठेवायचे ते हिटलर शिकला. श्री. बुद्धांनी निर्वाण प्राप्तीसाठी इतक्या उच्च धर्माची निर्मिती केली आणि तो धर्म उजव्या बाजूकडे गेला.

याचे शिवाय इतर लोक डाव्या बाजूकडे गेले आणि तंत्रविद्येचा जन्म झाला. लडाखमध्ये काही ठिकाणी मृत शरीराच्या हाताची प्रार्थना करतात. नेपाळमध्ये सुद्धा डावी बाजू इतकी वाढली आहे की ते लोक तंत्र विद्या, भूत विद्या, स्मशान विद्या, इत्यादींचे अवलंबन करतात. अशा तऱ्हेने बौद्ध धर्मात दोन प्रकारचे लोक तयार झाले. त्यांचा बुद्धांशी संबंध

नाही अथवा बुद्धांचा त्यांच्याशी नाही.

ख्रिश्चन धर्मातही असेच झाले. त्यांना अंतर्दामी काही शक्ति मिळवायच्या होत्या. म्हणून त्यांनी लोकांना कूसावर चढविले आणि श्री. ख्रिस्तांच्या नावाखाली अनेक प्रकार केले. अजूनही तुम्हाला अझर बैजान मध्ये हजारो लोकांना कसे मारले ते आर्मेनियामध्ये पहायला मिळते. मारतेवेळी ते एका हातात बायबल ध्यायचे, जणू काही त्यांच्या बरोबर परमेश्वरच होता, आणि त्यांना वाटते की त्यांच्याच धर्म बरोबर आहे, आणि मुस्लिम लोक वाईट आहेत. मुस्लिम सुद्धा तेच करतात. इस्लाम फारच सुंदर व महान धर्म आहे. मुस्लिम विद्वान लोक सुद्धा म्हणतात की इस्लाम आणि मुसलमान लोक यांच्यात फारच फरक आहे. ते लोक सुशिक्षित नसतात म्हणून त्यांना असे वाटतं असेल. परंतु शिक्षणाने मुर्ख लोकांना सुद्धा घडविले जाते. जसे कबीर म्हणाले होते, "पोथी पढ पढ मुख भये" आत्मा प्रकाशित होत नाही तोपर्यंत काहीच घटित होणार नाही. कोणताच धर्म तुम्हाला स्वतःमध्ये बिंबवता येत नाही. तो आत जाणारच नाही. तो फक्त बाह्यतच राहील आणि मग तुम्हाला काहीच समजणार नाही, तुम्ही पैशाच्या प्राप्तिच्या मागे लागल अथवा सत्तेच्या, पण आत्म्याच्या, प्राप्तीच्या मागे लागणार नाही.

आत्मा प्रकाशित झाल्यावर. त्या माणसाला अनपेक्षितपणे, त्याच्या अंतर्दामीच त्या तत्वाचा लाभ होतो. त्याला काहीही प्रयास करावे लागत नाहीत. आतून आपोआप त्याची जाणीव होते. हिंदू धर्मात सांगितले जाते की एकच आत्मा प्रत्येकामध्ये आहे. असे आहे तर मग जाती व वर्गाच्या बाबतीत आपण इतके जागरूक कसे असतो? विचार करा, रामायण लिहिणारा दरोडेखोर कोळी होता, श्रीरामांनी रामायण लिहिले नाही. श्रीरामांनी शबरीची उष्टि बोरे खाल्ली. शबरी खालच्या जातीची होती. गीता सुद्धा व्यासांनी लिहिली आणि व्यास खालच्या जातीच्या स्त्रीचे अनौरस पुत्र होते. हे सर्व एवढ्यासाठी केले गेले की आपल्यात काही तरी कमी आहे म्हणून आपण जाती पाती निर्माण केल्या. जो ब्रम्हाला जाणतो तो ब्रम्हण. मग वाल्मिकी ब्रम्हण होते. अनेक महान अवतार आले आणि त्यांनी माणूस जन्माने ब्रम्हण होतो या कल्पनेचा पुन्हा पुन्हा निषेध केला.

कबीराचे गुरू ब्रम्हण होते आणि त्यांनी विणकर जातीच्या कबीरांना आपले शिष्यत्व दिले होते. महाराष्ट्रातले महान संत व कवी नामदेव शिंपी जातीचे होते. शिखांच्या पवित्र ग्रंथसाहेबमध्ये नामदेवांच्या अनेक कवितांचा समावेश आहे. गुरू नानक आत्मसाक्षात्कारी असल्याने त्यांनी हे सर्व ओळखले होते. तिथे जे पोहोचतात त्यांना खरा कोण व खोटा कोण ते समजते. धर्माच्या नावाखाली अशा खोट्या गोष्टींचे

अवलंबन करणाऱ्या लोकांची आपल्याला दया वाटायला हवी. कारण ते अंध आहेत. कबीर म्हणाले होते “किसको समझाऊं सब जब अंधा” काही जण म्हणतात आम्ही हिंदू आहोत, काही म्हणतील ख्रिश्चन आहोत, मुस्लिम आहोत. वगैरे, अशातऱ्हेने तुम्ही एकमेकांच्या पासून दूर जाता.

सहज योगात तुम्हाला हे कळले आहे की सर्व धर्मांचे मर्म तेच आहे. आपण सर्व धर्मांवर विश्वास ठेवू त्यावेळी जगात पसरत असलेल्या मुलतत्त्व वादाचा नाश होईल. सर्व धर्म एक आहेत हे लक्षात घ्यायला हवेच पण अंतर्द्वार्यामी ठसायला हवे, आंतमध्ये उतरायला हवे, सहज योगात हिंदू, मुस्लिम, ख्रिश्चन, शीख, बौद्ध सर्व आहेत. एका विश्व निर्मल धर्मावर विश्वास ठेवता, तेव्हा सर्व धर्म एका धर्मात सामावलेले आहेत. ही सूज्ञता आहे मग तुम्ही सर्व अवतार, प्रेषित संत, सर्वांच्यावर विश्वास ठेवता. केवळ बोलून अथवा बौद्धिकतेमधून हे घडणार नाही. तुमच्या आंत आत्म्याचा प्रकाश खोलवर प्रकाशित होतो, तेव्हा ते घडून येते. त्यावेळी तुम्हाला काही म्हणायचे नसते. खोटे बोलणे, दुसऱ्याला त्रास देणे, खून करणे, असे काहीही तुम्ही करू शकत नाही. जे वाईट आहे त्याचेपैकी काहीच तुम्ही करू शकत नाही. तुम्ही स्पर्धेत उतरत नाही, की दुसऱ्यांचे पाय ओढत नाही. तुम्ही अतिशय समाधानात व ध्यानांत बसले असता, तुमच्या वैवाहिक जीवनांत सुद्धा पति आणि पत्नी यांच्यात सामंजस्य खोलपर्यंत रुजले असते. अनेक सुंदर स्त्रिया व देखणे पुरुष असले तरी पति अथवा पत्नी त्यांच्याकडे पहाणार पण नाहीत. इतरांच्यामध्ये असते तसे हे बाह्याचे आकर्षण तुम्हाला स्पर्शसुद्धा करीत नाही. तुम्हाला स्वतःबद्दल आदर असतो. आता तुमची दृष्टि स्थिर असते. आणि असे विचार सुद्धा तुमच्या मनांत येत नाहीत. तुम्ही इतके शांति आणि सुसंवादात राहता, त्याच्यामुळे इतर लोकही प्रभावित होतात.

लोक मला म्हणतात, “श्रीमाताजी तुम्ही इतक्या लोकांचे आजार बरे करता आणि पैसे घेत नाही” पण तुम्ही सुद्धा घेत नाही. तुम्ही चोरी करत नाही, खून करीत नाही, धुम्रपान, मद्यपान, अमली पदार्थांचे सेवन काहीही करीत नाही. तुम्ही गलिच्छ ठिकाणी जाणार नाही, अश्लील चित्र काढणार नाही अथवा पुस्तके वाचणार नाही. तुम्हाला हे मला सांगावे लागत नाही, तुम्ही हे करणारच नाही, तुम्ही इतके पवित्र झाल्यामुळे गलिच्छ गोष्टी ऐकणार नाही. अशा घाणेरड्या ठिकाणी जावेच लागले तर एखादे नाटक पहावे तसे साक्षिस्वरूपात तुम्ही जाल, तुमच्यामध्ये साक्षिरूपात जाण्याची शक्ति आली आहे.

तुमच्यामध्ये एकमेकांच्या बद्दल फार प्रेम आहे, जगात कोठेही जा, सहज योगी फार आनंदाने तुम्हाला सांभाळतील. अर्थात काही लोक त्याचा गैरफायदा घेतात, खोटे बोलतात. तरी सुद्धा त्यांची काळजी घेतली जाते. एक माणूस मद्रासला गेला व त्या लोकांना खोटे सांगितले की श्रीमाताजींनी मला पाठविले आहे. त्याने त्या लोकांच्याकडे घोडा मागीतला व इतर अनेक गोष्टी मागीतल्या आणि त्या लोकांनी फार प्रेमाने सर्व काही दिले. नंतर मला समजले की ती खोटी व्यक्ति स्वतःहूनच तिकडे गेली होती. मी पाहिले आहे की लोकांना त्रास झाला तरी ते सहन करतात पण तक्रार करीत नाहीत. परंतु मी असेही पाहिले आहे की माझ्या विरुद्ध काही म्हणाल्यास तुम्ही सहन करू शकत नाही,

आणि हा तुमच्या माझ्यावरील प्रेमाचा पुरावा आहे.

तुम्ही मला इतके प्रेम दिले आहे! आणि मला मोठा विश्वास आहे की संपूर्ण जगाने आत्मसाक्षात्कार घेतला आहे, असे माझे स्वप्न होते त्याची पूर्तता होईल. हे होत नाही तोपर्यंत जगात सुधारणा होणार नाही. आपल्यापुढे अनेक प्रश्न आहेत, नैसर्गिक आर्थिक, पारिवारिक, राजकीय इ. परंतु जेव्हा माणूस बदलेल, आणि विश्वबंधुत्व त्याच्या अंतर्द्वार्यामी उतरेल, त्यावेळी संघर्षाची आवश्यकताच राहणार नाही. मग सर्व प्रश्न आपोआप सुटतील. वृत्तपत्रे वाचता तेव्हा सामूहिक इच्छा करा की पंजाब प्रश्न सुटू दे, आणि तो सुटेल “गरीबी जाऊदे” असे म्हणून गरीबीची समस्या सुटणार नाही. आपण नदीच्या मध्यभागी आहोत. फार गरीब नाही व फार श्रीमंत पण नाही. हा प्रवाह वाढेल तेव्हा गरीब व श्रीमंत दोघेही आत येतील. अशा तऱ्हेने हा प्रश्न पण सुटेल.

तुमचे चेहरे किती चमकतात, सहज योगात जे प्रेम आहे, ते दुसऱ्या कोणत्याच समाजात नाही. दुसऱ्या गुरूंचे शिष्य असे दिसतात की जसे काही त्यांना इस्पितळात भरती व्हावे आहे. म्हणून तुम्हाला आत्मसन्मान हवा व काहीतरी विशेष असायला हवे. तुम्ही प्रार्थना करता व मला सांगता की तुमचा फायदा झाला. परंतु या लाभदायक पूर्जांच्या मागे तुम्हीच आहात, तुम्ही तसे नसता तर प्रार्थना करूनही काही कार्यान्वित झाले नसते. मंदिरांत काही थोड्या पूजा व प्रार्थना असतात का? पण आंत काहीच शिरत नाही. देवीला व इतर देवांना ते इतके अर्पण करतात पण आंत काहीच जात नाही. ते जसेच्या तसे राहतात. पापे आणि अत्याचार करीतच राहतात, त्यांच्यात विशेष काहीच नाही. आता सहज योग त्या अनेक देशात पसरला आहे. माझ्या जीवनकालांत हे घडेल असे मला कधीच वाटले नव्हते. तेव्हा आपण साधे सहज योगी नसून विशेष आहोत, हे लक्षात ठेवायला हवे. शक्य आहे तितक्या लोकांना आपण योगी बनवायला हवे. तेव्हाच जगाचा फायदा होईल व आपलाही होईल.

आज माझा वाढदिवस आहे पण तुमचा वाढदिवसही साजरा करायला हवा. प्रत्येक जन्मदिवशी तुम्ही वयाने मोठे होता. पण या वयाने मोठे होण्या बरोबरच प्रगल्भता (मेंच्युरिटी) आली नाही तर त्याचा काहीच उपयोग नाही. तुम्ही सहजयोगांतही मोठे होता परंतु प्रगल्भता वाढणे हे पण महत्त्वाचे आहे. एकदा प्रगल्भ झाल्यावर वृक्षाप्रमाणे तुम्ही मोठे होऊन इतरांना त्याचा फायदा होईल. तुमच्या सर्वांच्याकडे ही शक्ति आहे. आणि माझ्या सर्व शक्ति तुम्हाला मिळाल्यात अशी माझी इच्छा आहे. एका आईची आपल्या सर्व शक्ति मुलांच्याकडे जाव्याच अशीच असते. तुम्ही सर्वजण आनंदात व निर्वाणाच्या सुखात बसले आहात. ती मिळावीत म्हणून कित्येकांना झगडावे लागले. तुमच्याकडे मात्र ते अगदी सहजरित्या आले आहे. माझे आशिर्वाद तुमच्याजवळ आहेत. पण मनात एक विचार सतत असतो की तुम्हाला सोडून जाताना असे वाटत की हृदय भिजले आहे. पण दुसऱ्या ठिकाणी माझी वाट पहाणाऱ्या लोकांचा विचार केला की वाटते की ती पण माझीच मुले आहेत. मी इतका प्रवास करते पण तुम्हाला पाहिल्यावर हृदय आनंदाने भरते आणि माझ्या वयाचा विचार करायला वेळच नसतो.